International Journal for Multidisciplinary Research (IJFMR)
E-ISSN: 2582-2160 ● Website: www.ijfmr.com ● Email: editor@ijfmr.com

हिंदी नाट्य साहित्य में डॉ॰ राम कुमार वर्मा जी का योगदान

डॉ.आदित्य कुमार मिश्रा

महाराजा अग्रसेन हिमालयन गढ़वाल विश्वविद्यालय, सहायक प्राध्यापक

शोध सार

डॉक्टर राम कुमार वर्मा जी का जन्म 1905 में बनारस में हुआ था। यह महानतम घटनाओं का काल था। देश का राजनीतिक जागरण हो रहा था अब देश शोषण के विरुद्ध संघर्ष करने के लिए कमर कस चुका था। भारत के तत्कालीन वायसरॉय लॉर्ड कर्जन की प्रतिक्रियावादी नीतियों के कारण जनता उद्वेलित हो चुकी थी और जनभावना ने आंदोलन का रूप ले लिया था। 1905 में बंग भंग के विरोध में स्वदेशी आंदोलन किया गया। जिसमें देश के बड़े हिस्से ने भाग लिया। यह ऐसी प्रथम और महान घटना थी जिसमें पूरे भारत ने भाग लिया। जिस बंगाल को अंग्रेजों ने स्वयं भारतीयों के सहयोग से ही जीत लिया तथा बंगाल के ही सहयोग से पूरे भारत को अपने शोषण का शिकार बनाया। अब उसी बंगाल विभाजन को लेकर पूरे देश में आंदोलन छिड़ गया । अब बंगाल अलग न होकर संपूर्ण देश का हिस्सा था। बंगाल विभाजन का विरोध पंजाब, मद्रास, बम्बई, उत्तर पश्चिमी प्रांत आदि में अखिल भारतीय स्तर पर किया गया। अब अखिल भारतीय की भावना कश्मीर से लेकर कन्याकुमारी तथा गुजरात से लेकर पूर्वी सीमांत प्रांत तक फैल गयी । जिस कार्य को करने का दायित्व प्रारंभिक राष्ट्रवादियों जैसे दादाभाई नौरोजी, गोपाल कृष्ण गोखले, डब्ल्यू सी बेनर्जी तथा हिंदी साहित्य के आरंभिक साहित्यकारों जैसे भारतेंदु हरिश्चंद्र , रामचन्द्र शुक्ल, हजारी प्रसाद द्विवेदी, जयशंकर प्रसाद आदि ने अपने कंधों पर लिया उसको अपना तन मन धन समर्पित करके पूर्ण किया।

विषय वस्तु

दादाभाई नौरोजी ने कहा था ***"भारत की स्थिति अत्यंत सोचनीय है उसे निरंतर लूटा जा रहा है। प्राचीन काल में भी लुटेरे आते थे परन्तु लूटने के बाद चले जाते थे तथा कुछ ही वर्षों में भारत पुनः अपनी आर्थिक हानि पूरी कर लेता था। परन्तु अब तो यह लगातार ज़्यादा से ज़्यादा दरिद्र होता जा रहा है "इसे इस लूट से दम लेने का अवकाश ही नहीं मिलता "***

इसी बात को भारतेंदु जी ने अपनी साहित्यिक भाषा में इस प्रकार दिखाया है

"भीतर भीतर सब रस चूसें
हँसि हँसि के तन मन धन मूसैं
ज़ाहिर बातन में अति तेज
क्यों सखी साजन नहीं अंग्रेज"

इसी प्रकार अंग्रेजी राज़ के भ्रष्टाचार पर उन्होंने लिखा है

"चूरन अमले सब जो खावैं।
दूनी रुश्वत तुरत पचावें
चूरन साहब लोग जो खाता
सारा हिन्द हजम कर जाता"

इस प्रकार आरंभिक राष्ट्रवादियों तथा साहित्यकारों ने लोगों का जागरण किया। जिसके परिणाम की शुरुआत हमें 1905 के व्यापक जन आंदोलन में दिखती है। चंद्रगुप्त नाटक में चंद्रगुप्त कहता है ***"वीरगण! आज जो परिश्रम आप लोगों ने किया वह अकथनीय है। आज ही मुझे यह ज्ञात हुआ की मैं अकेला नहीं हूँ। भारत के अगणित वीर पुत्र सच्चे हृदय से मेरा साथ दे रहे हैं।"***

इन्हीं परिस्थितियों में डॉक्टर राम कुमार वर्मा जी का जन्म हुआ। डॉक्टर राम कुमार वर्मा जी भारतेंदु हरिश्चंद्र तथा जयशंकर प्रसाद की ही धारा को आगे बढ़ाते हैं। वर्मा जी ने कविता, नाटक ,एकांकी, निबंध एवं आलोचना आदि अनेक विधाओं में लिखा और सभी में यश प्राप्त किया। फिर भी नाटक उनकी प्रिय विधाओं में से एक है। डॉक्टर वर्मा ऐतिहासिक नाटकों की रचना के माध्यम से मात्र इतिहास को दोहराते नहीं है वरन उसकी गौरवशाली छवि अपनी युवा पीढ़ी के समक्ष प्रस्तुत करते हैं। डॉक्टर वर्मा जी प्राचीन ऐतिहासिक घटनाएं लेकर ऐतिहासिक पात्रों में नवजीवन तथा उनमें आवेग का संचार करते हैं। जय शंकर प्रसाद जी अपने साहित्य में साहित्यकार के साथ साथ साहित्य सर्जक भी है, परन्तु डॉक्टर राम कुमार वर्मा साहित्य सर्जक नहीं बनना चाहते हैं। उनका लक्ष्य सीधा साधा भारतीय गौरवशाली नाटक साहित्य परंपरा में एक अध्याय जोड़ना है। डॉक्टर वर्मा जी के नाटकों में पूर्ववर्ती व परवर्ती दोनों प्रकार की राष्ट्रीय चेतना के दर्शन समय - समय पर होते हैं।

हिंदी नाट्य साहित्य में योगदान के विषय पर विचार करते हुए तीन प्रमुख नाम मस्तिष्क में उभरकर आते हैं। भारतेंदु हरिश्चंद्र , जयशंकर प्रसाद तथा डॉक्टर राम कुमार वर्मा। जिन उद्देश्यों को लेकर भारतेंदु जी चले थे उन्हीं को परिमार्जित करने का कार्य किया था श्री जयशंकर प्रसाद जी ने किंतु जयशंकर प्रसाद जी के समक्ष कुछ चुनौतियां थीं जिससे पार पाना आवश्यक था। जैसे भारतेंदु जी के बाद द्विवेदी काल नाट्य साहित्य या तो बहुत कम लिखे गए या नाट्य साहित्य अपने उद्देश्य से भटक गया। लोकजागरण

के लिए भारतेन्दु जी ने नाटकों को एक सशक्त माध्यम बनाया जिसका मंचन भी सफलतापूर्वक हुआ तथा वह अपने उद्देश्य में भी सफल रहा। इसी समय पारसी रंगमंच बहुत ही प्रसिद्ध था जिसका उद्देश्य केवल सस्ती लोकप्रियता के माध्यम से अर्थोपार्जन था। यही प्रत्यक्ष समस्या जय शंकर प्रसाद जी के सामने भी थी फिर भी प्रसाद जी ने अपने नाटकों को इस दृष्टि से रचा जिससे कि उस महान उद्देश्य की पूर्ति हो सके जो समय व काल की मांग थी तथा जिसे भारतेंदु हरिश्चंद्र जी ने अपना उद्देश्य बनाया था। राम कुमार वर्मा जी का भी यही उद्देश्य था। देश ,काल व परिस्थितियाँ समय यात्रा कर चुके थे । अब देश के समक्ष नई चुनौतियां भी उभर कर आ चुकी थीं ।

डॉक्टर राम कुमार वर्मा जी ने लिखा है ***"जिस देश के पास हिंदी जैसी मधुर भाषा है वह देश अंग्रेजी के पीछे दीवाना क्यों हैं? स्वतंत्र देश के नागरिकों को अपनी भाषा पर गर्व करना चाहिए। हमारी भावभूमि भारतीय होनी चाहिए। हमें जूठन की ओर ताकना भी नहीं चाहिए"।***

इन पंक्तियों से हमे इनके काल की वर्तमान समस्याओं के बारे में बोध होता है। राम कुमार वर्मा जी ने भी अपने अधिकांश नाटकों का कथानक इतिहास की घटनाओं को बनाया जो आज भी हिंदी नाट्य साहित्य की अमूल्य धरोहर है तथा युवाओं में देशभक्ति को प्रेरित करते हैं । इसको हम निम्न पंक्तियों द्वारा समझ सकते हैं

जिस भारत की धुली लगी है, मेरे तन में
क्या मैं उसको कभी भुला सकता जीवन में
चाहे घर में रहूँ, रहूँ अथवा मैं वन में
पर मेरा मन लगा हुआ है इसी वतन में,
सेवा करना देश की
यही एक संदेश है,
मैं भारत का हूँ सदा
भारत मेरा देश है।

डॉक्टर राम कुमार वर्मा हिंदी के बहुमुखी प्रतिभा संपन्न नाटककार है। वह एकलव्य की भाँति अनेक दशकों से हिंदी साहित्य सेवा में लीन रहे। वे एक महान एकांकीकार नाटककार हैं। छायावादी युग के जयशंकर प्रसाद, सूर्यकांत त्रिपाठी निराला, महादेवी वर्मा के साथ काव्य साधना में उतरे और उन्होंने **एकलव्य, उत्तरायण, ओ अहिल्या** आदि काव्य प्रबन्धों की सृष्टि की। जहाँ एक ओर उन्होंने काव्य जगत में प्रसिद्धि प्राप्त की, वहीं दूसरी ओर उन्होंने नाटक क्षेत्र में भी पदार्पण किया। **शिवाजी, जौहर की ज्योति, विजयपर्व, महाराणा प्रताप, जय वर्धमान, जय भारत भारती** आदि अनेक नाटकों की रचना की। प्रसाद जी ने ऐतिहासिक पृष्ठभूमि को आधार बनाकर जिन नाटकों का शुभारंभ किया उसी धारा को नए ढंग से प्रस्तुत करने का

काम वर्मा जी ने अपने नाटकों में किया। डॉ राम कुमार वर्मा साहित्य की जिस विधा को अपनाते हैं वे अपना वैशिष्ट्य अंकित कर देते है। वह नाट्य कला की सफलता सामान्य दर्शक के रसमय होने व नाट्य कला के विद्वानों द्वारा नाटक को उत्कृष्ट समझे जाने को मानते हैं डॉक्टर राम कुमार वर्मा का भारत के इतिहास संस्कृति, उसकी गौरवगाथाओं एवं चरित्रों तथा उसकी उपलब्धियों से इतना गहरा रागात्मक संबंध रहा है कि जयशंकर प्रसाद के बाद हिंदी के ऐतिहासिक-सांस्कृतिक राष्ट्रीय नाटककारों में उनका महत्वपूर्ण स्थान है। जयशंकर प्रसाद ने हिंदी में ऐतिहासिक नाटकों की सृष्टि कर के इस धारा को सशक्त आधार प्रदान किया, तो उन के उपरान्त हरिकृष्ण प्रेमी, उदय शंकर भट्ट, सेठ गोविंददास आदि के साथ डॉक्टर राम कुमार वर्मा ने इसे न केवल विस्तार दिया बल्कि उसे अपनी विशिष्टता से नया रंग रूप प्रदान किया| राम कुमार वर्मा मूलतः ऐतिहासिक नाटककार है जिसमें भारत की राष्ट्रीयता और सांस्कृतिक चेतना साकार होती है। **शिवाजी** नाटक में उन्होंने भारतीय संस्कृति की विशिष्टता को तन्मयता के साथ अभिव्यक्त किया है और शिवाजी के आदर्श चरित्र के माध्यम से नवयुवकों में अच्छे संस्कार सृजित करने की चेष्टा की है

भगवान बुद्ध व जय वर्धमान में उन्होंने त्याग, दया, करुणा, सहानुभूति के महत्त्व को दर्शाया है। **महाराणा प्रताप, जौहर की ज्योति** में स्वतंत्रता प्राप्ति की ललक व आत्म बलिदान की भावना प्रस्तुत की है।

पुरातन काल से ही युद्ध की परंपरा रही है। भारतीय अपनी मातृभूमि की स्वतंत्रा के लिए सदैव बलिदान करते रहे हैं। ऐसे अनेक वीर है जो देश की सेवा को ही अपना धर्म मानते हैं। रहमान भी एक ऐसा ही देशभक्त है जो दुश्मनों से लोहा लेते हुए वीरगति को प्राप्त होता है।उक्त के संदर्भ में एक उदाहरण प्रस्तुत है-

सकीना-"मेरा बेटा खुद की कसम खाकर गया था कि वह दुश्मनों को नेस्तनाबूत कर के मेरे कदमों में सिर झुकाएगा। उसने दुश्मनों को तो नेस्तनाबूत कर दिया लेकिन वह मेरे कदमों में सिर झुकाने के लिए नहीं आया" ।

आधुनिक युग में सांप्रदायिक सद्भाव की अत्यधिक आवश्यकता है। काशी एक नैतिक गुणों से संपन्न नारी है। वह समाज में सांप्रदायिक सद्भाव जागृत करने की बात करती है। वह समाज में धार्मिक उन्माद को समाप्त कर धार्मिक सद्भाव जागृत करने की पक्षधर है। काशी ,बाबू के संवाद को एक उदाहरण के माध्यम से स्पष्ट किया जा सकता है

काशी-"दोनों ही ना कटे, दोनों ही ना टूटे, लेकिन वे दोनों चाँद और सूरज की तरह तो चमक सकते हैं। अगर मैं इस समय चयन शाह की जगह दिल्ली की सुल्ताना होती तो कहती(आगे बढ़कर गौरवपूर्ण स्वर में)हिंदुओं और मुसलमानों तुम हिंदुस्तान में न्याय की तराजू के दो पलड़े हो, एक दूसरे को संभाले रहो"।

पुरातन काल में नारियां अपनी रक्षा हेतु सदैव सतर्क रहती थीं । वे तलवार व कृपाण चलाने में कुशल होती थीं । बानू काशी से कहती हैं कि उसने अपनी कृपाण से दो लोगों को मृत्यु की गोद में सुला दिया है उपरोक्त के लिए एक उदाहरण इस प्रकार है-

बानू-"क्यों? क्या मैं कटार नहीं चला सकती? कैद होने से पहले मैंने दो सिपाहियों को मौत के घाट उतारा था"।

शिवाजी एक उच्च कोटि के शासक हैं उनके हृदय में नारियों के प्रति सम्मान के भाव है। गौहर बानू उनके यहाँ एक अतिथि है। वे अपने सेवक की भूल को अपनी गलती मानते हैं। वे भारतीय आदर्शों की मर्यादा की रक्षा करते हैं और अपने उदात्त चरित्र का परिचय देते हैं ।

"मेहमानों को यह कहना शोभा नहीं देता कि आपने कोई कसूर नहीं किया है , कोई गुनाह नहीं किया है, इस गुनाह को तो मैंने किया है कि पूजा के एक फूल को देवता के मस्तक से उठा लिया। मैं उस फूल को वहीं रखना चाहता हूँ और अपने अपराध के लिए सिर झुका लेता हूँ।"

शिवाजी के चरित्र में नैतिक दृढता, शौर्य व चरित्र की निर्मलता देखने को मिलती है। वे भारतीय संस्कृति व नैतिक आदर्शों का पालन करने वाले हैं। वे सभी धार्मिक ग्रंथों का सम्मान करते हैं। धर्मपूर्वक व न्यायपूर्वक शासन करना उनके जीवन का उद्देश्य है।

इस प्रकार डॉक्टर राम कुमार वर्मा जी के नाटकों में राष्ट्रीय चेतना विभिन्न रूपों में देखने को मिलती है। जिस प्रकार मध्यकालीन भारतीय समाज में धार्मिक भावनाओं को तांत्रिकों एवं पाखंडियों ने कुंठित किया उसी प्रकार आधुनिक भारत में आजादी के बाद भारतीय समाज को राजनीति के दुश्चक्र ने कुंठित कर दिया है। सच्ची राष्ट्रीयता का धीरे धीरे ह्रास होने लगा ,कदम कदम पर भ्रष्टाचार ,अनाचार ,अत्याचार ने राष्ट्रीय बोध को धूमिल कर के रख दिया। ऐसे समय में देश के महान साहित्यकारों का ध्यान समाज की गलनशीलता की ओर गया और उन्होंने समाज की छवि सुधारने का प्रयत्न किया। जिस महान उद्देश्य को लेकर भारतेंदु हरिश्चंद्र तथा जयशंकर प्रसाद ने नाट्य साहित्य को विकसित किया तथा उसके माध्यम से जनजागरण व समाज को दिशा देने का कार्य किया । समय के साथ हिंदी नाट्य साहित्य में इन उद्देश्यों की पूर्ति करने का सामर्थ्य खोता चला गया।

शोध सार

डॉक्टर राम कुमार वर्मा ने हिंदी नाट्य साहित्य का फिर से उद्धार किया। डॉ राम कुमार वर्मा जी ऐसे नाटककार थे, जिन्होंने अपने नाटकों में राष्ट्रीयता के स्वर को प्रमुखता दी। वे सामाजिक व राष्ट्रीय उत्थान के पक्षधर थे, राष्ट्रीयता वह भाव है जिससे अनुप्राणित हो साहित्य सर्जन अतीत का गौरवगान, वीरों की

यशोगाथा और कर्तव्यपरायणता के वर्णन के लिए प्रेरित होता है। वर्मा जी के नाटकों में ऐतिहासिकता एवं सांस्कृतिकता की जो धुरी है उसकी बाहरी परिधि में सर्वत्र राष्ट्रीयता का रंग भरा हुआ है। उनके सभी नाटक राष्ट्रीय चेतना से ओतप्रोत है।

उन्होंने अपने नाटकों में भारतीय संस्कृति की महानता एवं देशवासियों की अपनी मातृभूमि के प्रति अगाध श्रद्धा को चित्रित किया है। उनके नाटक भारतीय लोगों में त्याग, बलिदान व राष्ट्रप्रेम की भावना जागृत करने में सफल हुए हैं।

1. इतिहास के स्वर - डॉक्टर राम कुमार वर्मा
2. शिवाजी - डॉक्टर रामकुमार वर्मा
3. डॉक्टर वर्मा रचनावली - डॉक्टर कमल किशोर गोयनका, डॉक्टर चंद्रिका प्रसाद
4. पजयशंकर प्रसाद प्रसाद का नाट्य साहित्य- डॉक्टर भानु देव
5. आधुनिक गद्य साहित्य का इतिहास- इग्नू
6. समकालीन हिंदी नाटकीय काव्य चेतना- डॉक्टर चंद्रशेखर
7. हिंदी साहित्य 20 वीं शताब्दी- नंददुलारे वाजपेयी
8. भारतेंदु हरिश्चंद्र- मदन गोपाल द्विवेदी
9. जयशंकर प्रसाद- नंददुलारे वाजपेयी
10. आधुनिक भारत का इतिहास- डॉक्टर विपिन चन्द्र
11. नवजागरण और छायावाद- महेन्द्र राय राधा कृष्ण प्रकाशन
12. स्वतंत्रता का मुक्ति संग्राम- अयोध्यासिंह उपाध्याय
13. महावीरप्रसाद द्विवेदी और हिंदी नवजागरण- रामविलास शर्मा
14. हिंदी साहित्य 20 वीं शताब्दी- नन्द दुलारे वाजपेयी
15. चिंतामणि भाग दो- आचार्य रामचन्द्र शुक्ल
16. हिंदी नाटक का विकास- शिव नाथ
17. प्रसाद साहित्य में युग चेतना- डॉक्टर लीलावती गुप्ता
18. भारत की प्राचीन संस्कृति- डॉक्टर राम जी उपाध्याय
19. अशोक के फूल- हजारी प्रसाद द्विवेदी